

जी.एम. काई से मलेरिया का इलाज

चर्चा में क्यों ?

मानव रोगों में चेचक या टाइफाइड की तुलना में मलेरिया का उन्मूलन सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण साबित हो रहा है और यह दुनिया की लगभग आधी आबादी के लिये एक वास्तविक और नरिंतर खतरे जैसा है। वैज्ञानिकों ने एक ऐसा जी.एम. काई (moss) तैयार किया है, जिससे अब मलेरिया का इलाज किया जा सकता है। आनुवंशिकी रूप से रूपांतरित मॉस या काई का उपयोग करके बड़े पैमाने पर मलेरिया नविकारक औषधि आर्टेमिसिनिन का उत्पादन किया जा सकता है।

काई (moss) क्या है ?

- काई एक छोटा-सा पुष्प-रहित हरे रंग का पौधा होता है, जिसमें जड़ नहीं होती है। यह नमी वाले स्थानों में अधिक उगता है। इसकी सरल संरचना आनुवंशिकी इंजीनियरिंग दवाओं के लिये एक आदर्श स्थिति प्रदान करती है।

प्रमुख बढि

- वशिव स्वास्थ्य संगठन के अनुसार बीस वर्ष पहले मलेरिया से हर साल औसतन 20 लाख लोगों की मृत्यु होती थी।
- बाद में इसके उपचार में कुछ प्रगत होने के बावजूद भी अकेले वर्ष 2015 में मलेरिया के 212 मिलियन मामले दर्ज किये गए और 4,29,000 लोगों की इस बीमारी से मृत्यु हुई थी।
- अब तक मलेरिया के उपचार के लिये आर्टेमिसिनिन (Artemisinin) नामक औषधि का प्रयोग किया जाता रहा है।
- आर्टेमिसिनिन का उपयोग चीन में सामान्य ज्वर और सूजन के लिये किया जाता है। परंतु इस औषधि की आपूर्ति पर्याप्त नहीं होती है, जिसके कारण इससे इलाज महंगा पड़ता है।
- लेकिन नए शोधों से स्पष्ट हुआ है कि काई को आनुवंशिकी रूप से रूपांतरित कर आर्टेमिसिनिन नामक औषधि को औद्योगिक स्तर एवं कम लागत में तैयार किया जा सकता है।

आर्टेमिसिनिन क्या है ?

- आर्टेमिसिनिन, आर्टेमिसिया एनआ (Artemisia annua) नामक पौधे से प्राप्त किया जाने वाला पदार्थ है। आर्टेमिसिया एनआ का पौधा अल्प-अवधि के लिये गर्मी के मौसम में उगता है।
- इसकी जटिल संरचना के कारण इससे औषधि तैयार करना कठिन है और इसका रासायनिक संश्लेषण आर्थिक दृष्टि से संभव नहीं है।

इस शोध का महत्त्व

- यह शोध आनुवंशिकी रूप से मजबूत पौधे पर आधारित मंच प्रस्तुत करके सथितिक जैव प्रौद्योगिकी की सीमाओं का वस्तितार करता है, जिससे अन्य जटिल, उच्च-मूल्य वाले पौधों पर आधारित यौगिकों के औद्योगिक उत्पादन के लिये बढ़ाया जा सकता है।